पं. मोतीलाल शास्त्री स्मारक व्याख्यान

प्रतिवेदन

श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा पण्डित मोतीलाल शास्त्री स्मारक व्याख्यान का सफल समायोजन दिनांक 28.09.2017 को भारत अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र (उपभवन), नई दिल्ली के व्याख्यान कक्ष में सम्पन्न किया गया। इस व्याख्यान में वक्ता के रूप में प्रो. कपिल कपूर, कुलाधिपति, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (गुजरात), ने 'भारत वर्ष : भारत आख्यान' विषय पर अपनी रोचक शैली में सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभा की अध्यक्षता प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा की गयी। इस व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात कला इतिहास विशेषज्ञ डॉ. कपिला वात्स्यायन उपस्थित थीं। सभा का संचालन विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के उपाचार्य एवं श्री शंकर शिक्षायतन के समन्वयक डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल ने किया।

भारतवर्ष का वास्तविक स्वरूप क्या था, इसकी सीमाएँ कहाँ तक विस्तृत थीं, यहाँ की संस्कृति ने किस प्रकार विकास के चरम स्थान को प्राप्त किया, यहाँ कितने प्रकार की भाषाएँ एवं लिपियाँ प्रचलित थीं, इत्यादि विषय को लेकर पण्डित मधुसूदन ओझा ने वेद, पुराण, ब्राह्मण, आरण्यक, वेदाङ्गों, स्मृतियों आदि को आधार बनाकर भारतवर्ष के वास्तविक स्वरूप एवं यहाँ की बौद्धिक सम्पदाओं को रेखांकित करते हुए इन्द्रविजय नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया। इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद प्रख्यात भाषाशास्त्री एवं संस्कृत विद्वान् प्रो. कपिल कपूर ने Bharatavarsha The India Narrative नाम से किया है जिसका प्रकाशन श्री शंकर शिक्षायतन एवं रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस ग्रन्थ का लोकार्पण इसी शुभ अवसर पर सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीपप्रज्वालन से हुआ। तदनन्तर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के वैदिक विद्वान् डॉ. सुन्दरनारायण झा वैदिक मङ्गलाचरण एवं डॉ. रामानुज उपाध्याय ने लौकिक मङ्गलाचरण प्रस्तुत किया। अतिथियों का स्वागत अङ्गवस्त्र के द्वारा श्री शंकर शिक्षायतन के न्यासी श्री आनन्द बोर्दिया ने किया।

सभा का स्वागत करते हुए डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल ने व्याख्यान के विषय एवं पं. मधुसूदन ओझा विरचित इन्द्रविजय के अंग्रेजी अनुवाद भारतवर्ष भारत आख्यान की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान समय में इस ग्रन्थ का विशेष महत्त्व है क्योंकि पण्डित मधुसूदन ओझा ने इस ग्रन्थ में हमारे समक्ष भारतवर्ष का स्वरूप, भाषा, लिपि, जीवन शैली, संस्कृति आदि को वैदिकविज्ञान के आलोक में प्रस्तुत करने का स्तुत्य प्रयास किया है। भारतवर्ष के वास्तविक स्वरूप एवं भारतीय ज्ञानराशि के स्वरूप को प्रकाशित करने वाले इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद प्रो. कपिल कपूर द्वारा उतने ही रोचक एवं सारगर्भित शैली में किया गया है।

पण्डित मोतीलाल शास्त्री स्मारक व्याख्यान में अपना वक्तव्य देते हुए प्रो. कपिल कपूर ने इन्द्रविजय ग्रन्थ में वर्णित विविध आयामों को प्रतिपादित करते हुए कहा कि इस ग्रन्थ में मुख्यरूप से बौद्धिक परम्परा एवं भारतीय निवासियों के जीवनशैली का प्रतिपादन ओझाजी ने वैदिक प्रमाणों के आधार पर किया है। ग्रन्थ में वर्णित भारतवर्ष की सीमाप्रसङ्ग विषय को बतलाते हुए प्रो. कपूर ने कहा कि भारतवर्ष का विस्तार चीन समुद्र से लेकर पश्चिमी लाल समुद्र तक विस्तृत था। इस ग्रन्थ में नगर के एवं क्षेत्र के नाम और स्थान का वर्णन विस्तार से किया गया है।

पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा उपस्थापित वेद ऐतिहासिक प्रमाणों की श्रेणी में नहीं आता है। प्रो. कपूर ने संकेत किया कि वर्तमान कालिक इतिहास उत्खनन और प्राप्त स्रोतों के आधार पर प्रमाण सिद्ध करते हैं। जबकि वेद को इतिहास और पुराण के आधार पर जाना जा सकता है। पण्डित ओझाजी ने इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में भारतवर्ष एवं यहाँ के निवासियों का सफल चित्रण किया है।

भौगोलिक एवं स्थलाकृति के आधार पर अन्य विषयों को इस ग्रन्थ में समाहित किया गया है। एक ही वेद मन्त्र के अनेक अर्थ होते हैं तभी तो वाद की परम्परा विकसित हुआ है। ' अगर वाद न होता तो वेद नहीं होता'। प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि भारतवर्ष में पाँच प्रकार की विद्याएँ थीं जिसका विस्तृत विवरण इस ग्रन्थ में उपलब्ध है।

मुख्यातिथि के रूप में अपने संक्षिप्त परन्तु सारगर्भित रूप में सभा को सम्बोधित करते हुए डॉ. कपिला वात्स्यायन ने कहा कि हमें वैदिक ज्ञान-परम्परा, विशेषकर पं. मधुसूदन ओझा प्रतिपादित वैदिक-विज्ञान को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इस विषय पर पाश्चात्य प्राच्यविदों ने भी अपनी व्याख्या प्रस्तुत की हैं, परन्तु वो मनमानी व्याख्या है। वैदिक-विज्ञान को व्याख्यायित कर इस व्यापक ज्ञानराशि को ओझा जी

ने जिस प्रकार सबके लिये सुगम किया है, एतदर्थ उनके इस अमूल्य योगदान को बढावा देकर उसे चरितार्थ करने की आवश्यकता है । ओझाजी के इन्द्रविजय नामक अमूल्य कृति का अंग्रेजी अनुवाद कर प्रो. कपिल कपूर ने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । युवा पीढी को अवश्य ही इस कार्य से लाभान्वित होकर इसको आगे बढाने का कार्य करना चाहिये।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय ने श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा समायोजित स्मारक व्याख्यान एवं ओझाजी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का अंग्रेजी में अनुवादकार्य कराने हेतु संस्था को साधुवाद देते हुए इन्द्रविजय ग्रन्थ की छन्दोबद्ध शैली में रचना की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए ओझा जी के इस पाण्डित्यपूर्ण रचना को सरल एवं सरस छन्दों में संयोजन हेतु उन्हें विलक्षण प्रतिभा का धनी बतलाया । उन्होंने प्रो. कपिल कपूर द्वारा अपने व्याख्यान में भारतवर्ष के विषय में दिये गये कतिपय उदाहरणों को कालिदास के मेघदूत नामक रचना के कुछ प्रक्षिप्त अंशों से पुष्ट भी किया।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री शंकर शिक्षायतन के न्यासी श्री आनन्द बोर्दिया जी ने सभा में उपस्थित विद्वानों के समक्ष यह जिज्ञासा प्रकट की कि आखिर वह क्या कारण है कि हमारा भारतवर्ष ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में इतना समृद्ध था, परन्तु अभी ऐसी स्थिति नहीं है । इस विषय में हमें चिन्तन-मनन करने की आवश्यकता है । उन्होंने भारत की शास्त्र एवं शस्त्र की समान रूप से प्रवहमान पद्धति की चर्चा करते हुए ओझाजी विरचित इन्द्रविजय में वर्णित शस्त्रज्ञान प्रकरण की ओर हमारा ध्यानाकर्षित किया ।

इस स्मारक व्याख्यान में श्रोता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के अङ्गीभूत विविध महाविद्यालयों, जामिया मिलिआ इस्लामिआ विश्वविद्यालय, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अनेक आचार्य, शोधार्थी एवं स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षा के अनेक विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया ।